मासिक RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्य: 100 /- रूपये

वर्ष - 20 अंक - 5
(मार्च - 2024)
Vol - XX Issue No - V
(March - 2024)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

8.0
IMPACT FACTOR

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed in the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 8.0
» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427
AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

अक्षर वार्ता
RNI No. MPHIN/2004/14249
(मार्च - 2024)
(March - 2024)

अनुक्रम

» "रामधारी सिंह दिवाकर की कहानियों में स्त्री पात्र का [illegible]
[illegible]
07
» जयशंकर प्रसाद [illegible] नाटकों के [illegible] राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप
(विशेष संदर्भ : स्कंदगुप्त व चन्द्रगुप्त नाटक)
रोबिन
10
» महाकवि कालिदास के काव्यो में संस्कार
अंकित शर्मा
13
» कॉलरिज का कल्पना सिद्धांत
प्रो. बीना जैन
16
» यात्रामिमां समापय बन्धो ! शनैः शनैः ||
डॉ. समय सिंह मीना, डॉ. प्रेमलता मीणा
19
» भारतीय संविधान की विशेषताओं का समालोचनात्मक अध्ययन
विजय लक्ष्मी जोशी
24
» उदय प्रकाश के काव्य में लोक जीवन
अंजू कृष्णियाँ, डॉ. स्वर्णा
27
» पद्मा शर्मा के कहानी संग्रह 'रेत का घरोंदा' की अनूठी स्त्रियाँ
डॉ. प्रतिभा पाण्डेय
29
» हिन्दी नवजागरण : अवधारणा व अन्तर्विरोध
डॉ. अमित कुमार
35
» भारतीय संदर्भ और वैश्वीकरण
आराधना पटेल, प्रो. आभा सक्सेना
प्रिंस जायसवाल
37
» आर्थिक विषमता की दृष्टि से उपन्यास 'अक्षयवट' : एक अध्ययन
रितुका चौहान, प्रो. ममता सिंह
41
» मनु शर्मा के उपन्यास में स्वराज्य संघर्ष का अवलोकन
किशोर कुमार शर्मा, डॉ. अंजली शर्मा
43
» संगीत की वेदमूलकता
डॉ. कावेरी त्रिपाठी
45
» भारतीय संविदा विधि एवं अंग्रेजी संविदा विधि का तुलनात्मक अध्ययन
गरिमा राठौर, डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह
48
» हिन्दी साहित्य में सिनेमा का वर्तमान स्वरूप
डॉ. मीनाक्षी अधिकारी
52
» गुरूघासीदास : समाज सुधारक के रूप में
चन्द्रकांत सोनवानी, डॉ. निधि वर्मा
54
» हिंदी कथा-साहित्य में संजीव बख्शी का योगदान
कु. कुसुम, प्रो. अनुसुइया अग्रवाल
56
» डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कविताओं में देशभक्ति व राष्ट्रप्रेम की भावना
[illegible] डॉ. निधि वर्मा
59
» [illegible]
डॉ. [illegible] कुमार
63
» चंद्रकांत देवताले की कविताओं में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति
अंजली पाठक, डॉ. ज्योति धनोतिया
66
» हिन्दी कहानी में वृद्ध विमर्श
डॉ. रितु
68
» दलित जीवन : जयप्रकाश कर्दम के कविताओं में
डॉ. रश्मि. यू. एम.
71
» महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता में "नारी शक्ति वंदन कानून" की भूमिका
डॉ. चंचल देवी
74
» राष्ट्रकवि दिनकर और वैश्विक चिंतन
मुमताज परवीन
76
» "प्राचीन भारत में राजनीति और शासन का अध्ययन"
डॉ. स्नेहलता सिंह
79
» ममता कालिया के उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन का विघटन
कु. मोनिका, डॉ. सुनील कुमार
83
» अध्ययन आदतों के सन्दर्भ में मिश्रित अधिगम उपागम का समीक्षात्मक अध्ययन
सुनील कुमार, प्रो. बसंत बहादुर सिंह
86
» गली आगे मुड़ती है उपन्यास में 'दार्शनिक चेतना'
प्रकाश नारायण सिंह चौहान,
डॉ. सुरेन्द्र बहादुर सिंह चौहान
91
» प्राचीन भारतीय मंदिर स्थापत्य
डॉ. विनोद राय
93
» गिलिगडु : एक मूल्यांकन
डॉ. फिरोज आलम
96
» व्यक्ति एवं समाज : समाज की संकल्पना और गांधी (ग्राम, शहरी)
महेंद्र सिंह
99
» छत्तीसगढ़ की प्रथम कवयित्री निरूपमा शर्मा के काव्य में प्रेम की अभिव्यक्ति
कावेरी जायसवाल, डॉ. अजय कुमार शुक्ला
101
» स्वतन्त्रता आन्दोलन में भारतीय महिलाओं का योगदान
डॉ. अरूण कुमार सिंह
103
» भारतीय किसान : संभावनाएं एवं चुनौतियाँ
डॉ. जय कुमार
107
» प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक चेतना
राजेश कुमार
110

(32)

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 8.0
Vol - XX, Issue - V, March - 2024
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-000
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed J

चंद्रकांत देवताले की कविताओं में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति

अंजली पाठक
डॉ. ज्योति धनोतिया

1. शोधार्थी, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल, मप्र.
2. प्राध्यापक, शासकीय हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल, मप्र.

चंद्रकांत देवताले साठोत्तरी युग के एक लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से तालमेल रखकर समाज की खोखली परंपराओं पर तथा राजनीति के झूठे वादों के मर्म को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। आपकी कविताएं सत्य की अनुभूति को रागात्मकता के साथ एक धागे में पिरोने का प्रयास करती हैं। देवताले जी की कविताएं देश के सामाजिक व राजनीतिक द्वन्दों में फंसे आम आदमी की व्यथा का मार्मिक चित्रांकन करती हैं। आम जनों की कुंठा, अस्तित्वबोध, निराशा, झटपटाहट, मानसिक तनाव, पारिवारिक उलझनें व्यक्त करते हुए कवि दरअसल जर्जर होती मानवता से समाज का साक्षात्कार करवाना चाहता है। देवताले जी ने समाज के यथार्थ का वर्णन करते हुए इसमें निहित होती कुरूपताओं तथा विडंबनाओं को उदघाटित किया है।

समकालीन कवियों ने सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करते समय स्त्री को विशेष रूप से केंद्र में रखा है। समाज द्वारा अपेक्षित स्त्री को समकालीन कविओं ने अपनी संवेदनात्मक दृष्टि द्वारा उसकी पीड़ा, निराशा, शोषण को प्रस्तुत कर उसे मानवीय रूप में प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया है। चंद्रकांत देवताले ने भी अपने काव्य में नारी का यथार्थ पूर्ण चित्रण किया है, जिसमें उसके जीवन के विविध पक्षो पर चिंतन किया गया है। कवि का मानना है कि परिवारों का अधिकांश कार्य स्त्रियों के ही जिम्मे आता है, और स्त्री अपने सभी कर्तव्यों का कुशलतापूर्वक निर्वहन भी करती है, लेकिन परिवार और समाज की उपेक्षा से वह दुखी हो जाती है। कवि अपने भावुक हृदय से समाज को स्त्री की वेदना से अवगत कराते हुए कहते हैं.....

'औरत जो हंसी और गुलाब है इस पृथ्वी पर
औरत जो चंद्रमा और संगीत का सत है
औरत जो समुद्र है और समुद्र का नमक भी
औरतें जो शहर हैं और सपनों का छत्ता बनाती मधुमक्खी भी
उसी औरत की चीख और हया
आत्मा से बिखर कर सड़कों पर बिछ जाती है'[1]

भारतीय संस्कृति में नारी को पूजनीय माना गया है। कहा भी गया है कि जहां नारी की पूजा नहीं होती है उस स्थान पर देवताओं का वास नहीं होता। इसलिए भारतीय समाज अपने इष्ट देवताओं में देवी की आराधना भी अनिवार्य रूप से करता है लेकिन वही पुरुष पारिवारिक तथा सामाजिक त्याग और बलिदान की अपेक्षा रखते हैं, वह भी एक हाड़ मांस साधारण इंसान है। निरंतर होते शोषण और अपमान से वह भी भीतर टूट जाती है, घुटती रहती है तथा अपने संस्कारों के कारण व नहीं करती। 'नहाते हुए रोती हुई औरत' कविता में कवि ने स्त्री की का मार्मिक चित्रण किया है...

'रो रही है वे आवाज पत्थर और पतियों की तरह
वह जानती है पानी बाहर ले जाएगा
आंसुओं और सिसकियों को चुपचाप
शिनाख्त नहीं कर पाएगा कोई भी
वह तक नहीं जो कल्पना में देख सकता होगा
बारिश में टपकती और ओस की भी बूंद'[2]

औरत की वास्तविक स्थिति यही है कि वह अपने दुख द कर रखती है सबके सामने हंसती मुस्कुराती स्त्री एकांत में ही व्यक्त करती है।

समाज स्त्री के प्रति दोहरे व्यक्तित्व का निर्वाह करता वक्तव्य और लेखनी में स्त्री को सम्मान देने वाले लोग ही अक्सर उ दैहिक हनन के अपराधी होते हैं। चेहरे पर शराफत का नकाब लगा स्त्री को मात्र देह मानते हैं और उसका शारीरिक शोषण करते ह समाज में पुरुष की इस दोहरी मानसिकता को बेनकाब करते हुए

'नवरात्रों के उत्सव उन्माद और उत्पादों से थका शहर
गहरी नींद में रहा होगा
क्योंकि डरती सुनाई चीख और असहाय
कातर गुहार
उस पच्चीस- छब्बीस बरस की युवती की
पता नहीं कहां की गई होगी हत्या
उसके पहले कहां बलात्कार
कितने होंगे भेड़िए तीन से कम तो हरगिज नहीं
कौन होंगे हत्यारे धन्ना सेठ ताकतवर दरबारी'[3]

स्त्री सदियों से पुरुष की हवस का शिकार होती रही समय में भी यह आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। देवताले स्त्री की अ लेकर समाज से प्रश्न पूछते हैं कि उनकी ही अपनी बहिन, बेटी,

जीवन के अच्छे प्रसंगों की ओर उन्मुख होने को प्रेरित करते हैं..

'भूल जा जोर जबरदस्ती की रात
अंधेरे के हमले को भूल जा बाई
याद कर खेत और पानी का रिश्ता
सब कुछ सहने के बाद भी कितना दर्द लेती है धरती किस- किस
हिस्से में कहाँ - कहाँ
तभी तो जन्म लेती है फसलें'

चंद्रकांत देवताले नारी जाति के पक्षधर रहे हैं। वे नारी पर होते शोषण को देखकर व्याकुल हो उठते हैं। वे सदियों से चली आ रही है, इस नियति के विरुद्ध आवाज उठकर समाज की तस्वीर बदलना चाहते हैं। प्रत्येक काम को तत्परता से करने वाली स्त्री के हिस्से में दर्द ताने, मारपीट ही क्यों आती है? यह प्रश्न कवि को व्यथित कर देता है, इसीकारण चंद्रकांत देवताले ने महिलाओं को केंद्र में रखकर अनेक कविताओं का सृजन किया है। उन्होंने नारी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। समाज में उनकी स्थिति का बेबाकी से चित्रण किया है।

देवताले जी ने समाज में स्त्री की स्थिति को प्रत्येक आयाम से परखा है, और इस पड़ताल में उन्होंने पाया कि समाज में स्त्री की स्थिति अच्छी नहीं है। बलात्कार दहेज प्रताड़ना, अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता, भ्रुण हत्या शारीरिक मानसिक हनन आदि द्वारा नारी समाज में हमेशा सतायी जाती रही है। कवि ने अपनी रचनाओं में समाज की नारी जाति के प्रति कुंठित सोच और अंतरविरोधों को दर्शाया है। चंद्रकांत देवताले नारी जाति से भी अनुरोध करते हैं कि वे अपने कर्तव्यों के साथ साथ अपने अधिकारों को भी महत्व दें। अन्यथा यह समाज सदैव उन्हें प्रताड़ित करता रहेगा। कभी वह पुरुष की वासना का शिकार होंगी, तो कभी दहेज की ज्वाला में जलाकर राख कर दिन जायेगी। कवि अपना कवि कर्म निभाते हुए समाज के कटु और घिनोने सत्यों का पर्दाफाश करते हुए दिखाई देते हैं।

'सगुण की साड़ी पर
मिट्टी का तेल छिड़क
आत्महत्या कर रही है नई व्याहताएं
अनगिनत शकुंतलाएं
जवाब :
व्यक्तिगत वजह से होता है ऐसा
कभी-कभी झंझट दहेज का'

कवि नारी के मौन और नारी के प्रति समाज की कुटिल राजनीति, घिनौने विचारों को लेकर चिंतित है। वे नारी को सामजिक बंधनों और रूढ़िवादी विचारों से मुक्त करके उसे उड़ने का हौसला और पंख देना चाहते हैं। उनकी रचनाओं में नारी की अस्मिता, नारी शोषण पर बेबाकी से चित्रण हुआ है साथ ही कवि ने स्त्री को आत्मविश्वास और स्वाभिमान से जीने के लिए भी प्रेरित किया है।

संदर्भ सूची:-

1. चंद्रकांत देवताले / भूखंड तप रहा है/ पृष्ठ -39
2. चंद्रकांत देवताले /पत्थर की बैंच / पृष्ठ - 32
3. चंद्रकांत देवताले / उजाड़ में संग्रहालय / पृष्ठ -78